नाम - रामू प्रसाद पद - Assistant Prof.
कॉलेज - T.N.A.T.T.C. Harigaon Ara
Sub - Pedagogy of Biological Science
Class - B.Ed. (1st year)
Date - 28/04/2021

प्रोजेक्ट विधि की प्रक्रिया (Process of Project Method)

सर्वप्रथम किसी कक्षा के विद्यार्थी छात्र एवं शिक्षक मिलकर किसी प्रोजेक्ट का चयन करते हैं। तत्पश्चात् कक्षा में छात्रों के समक्ष इसका विवेचन होता है। इसमें बेसिक उद्देश्य की प्राप्ति, लाभ एवं समस्याओं के निराकरण हेतु उपाय आदि पर विचार होता है। प्रोजेक्ट स्वीकृत हो जाने पर शिक्षक उसकी रूपरेखा तैयार करता है और छात्रों को घर पर इसका गहन अध्ययन करने के लिए कहता है। इसके लिए एक कक्षा चक्र का समय भी दिया जा सकता है। इसके बाद शिक्षक और छात्र मिलकर प्रोजेक्ट के लिए एक योजना (Plan) तैयार कर लेते हैं।

तत्पश्चात् प्रोजेक्ट के क्रियान्वयन के लिए कक्षा को छोटे समूहों में विभाजित कर दिया जाता है और प्रत्येक समूह को प्रोजेक्ट में कार्य करने के सम्बन्ध में निश्चित जिम्मेदारी सौंप दी जाती है। प्रोजेक्ट की योजना में कार्य करने के लिए समय और संसाधनों की व्यवस्था भी सम्मिलित कर लेनी चाहिए ताकि कार्य सुनियोजित ढंग से पूर्ण हो जाये। अगले दिवस शिक्षण के चक्र में छात्र अपने-2 समूह के निर्धारित कार्य को करते हैं और प्रोजेक्ट को पूर्ण करने का प्रयास करते हैं प्रोजेक्ट सामूहिक अथवा व्यक्तिगत दोनों ही ढंग से पूर्ण किये जा सकते हैं। इसमें शिक्षक उनका पथ-प्रदर्शन करता है। प्रोजेक्ट के पूर्ण हो जाने पर उसका मूल्यांकन किया जाता है तथा उसका अभिलेख तैयार किया

जाता है। इस प्रकार बालों को किसी समस्या विशेष का ज्ञान प्राप्त हो जाता है अथवा किसी कार्य को पूर्ण करने की क्षमता का विकास होता है।

प्रोजेक्ट विधि के शिक्षण पद (Steps of Teaching of Project Method)

इस विधि में निम्नलिखित शिक्षण पदों का अनुसरण किया जाता है।

1.) समस्या का चयन (Selection of Problem)
2.) नियोजन (Planning)
3.) कार्यान्वयन (Executing)
4.) अभिलेखन (Recording)
5.) मूल्यांकन (Evaluation)

प्रोजेक्ट विधि के गुण: (Merits of Project Method)

इस विधि के गुण निम्नलिखित हैं-

1. यह मनोवैज्ञानिक विधि है क्योंकि इसमें शिक्षण सिद्धान्तों एवं शिक्षण सूत्रों का उपयोग किया जाता है।
2. इस विधि में खेलविधि द्वारा बालों को ज्ञान दिया जाता है। इसमें बालक तन्मयता से कार्य करते हैं।
3. यह विधि विद्यालय की शिक्षा को व्यवहारिक जीवन से सम्बन्धित करती है।
4. यह विधि पिछड़े बालकों के लिए वरदान स्वरूप है क्योंकि इसमें प्रत्येक बालक को अपनी रुचि

एवं क्षमताओं के अनुरूप स्वेच्छापूर्वक स्वतन्त्रता से कार्य करने का अवसर मिलता है।

5.) यह विधि बालों में नेतृत्व, सहिष्णुता एवं पारस्परिक सहयोग की भावना विकसित करती है।

6.) यह विधि बालों में श्रम के प्रति प्रेम उत्पन्न करती है।

7.) इस विधि द्वारा बालो में मानसिक थकान नहीं आती है।

8. यह विधि बालों को यथार्थ एवं व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करती है क्योंकि इसमें बालक स्वयं करके सीखते है।

9.) यह विधि बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करती है।

प्रोजेक्ट विधि के दोष- (Demerits of Project Method)

1.) इस विधि में समय एवं शक्ति का अपव्यय होता है।

2.) इसमे शिक्षण कार्य क्रमानुसार एवं व्यवस्थित ढंग से नहीं हो पाता है।

3.) इस विधि से कक्षा का पाठ्यक्रम क्रमबद्ध ढंग से पूर्ण करना सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम का प्रत्येक प्रकरण भी प्रोजेक्ट कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होता है।

4.) इस विधि में लेखन कार्य को भी बहुत कम अवसर मिलता है।

5.) इस विधि का उपयोग करने से विषयवस्तु के अन्य समस्त क्रिया-कलाप अस्त-व्यस्त हो जाते हैं।